श्रेष्ठ समाज के लिए नैतिक, आध्यात्मिक एवं मानव मूल्य प्रेरित

शिक्षा दर्पण

शिक्षा प्रभाग की त्रैमासिक समाचार पत्रिका | अगस्त - 2015 | ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू (राज.)

1. ज्ञान सरोवर में आयोजित विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के शिक्षाविदों के महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए दिल्ली के उप मुख्यमंत्री माननीय श्री मनीष सिसोदिया, साथ हैं वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा के डॉ. विनय कुमार पाठक, ब्र.कु. निर्मला दीदी, ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. हरीश शुक्ल, ब्र.कु. सुदेश बहन तथा ब्र.कु. मंजू बहन।

2. शान्तिवन में आयोजित अखिल भारतीय उच्च माध्यमिक शिक्षकों के महासम्मेलन का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए गुजरात के राज्यपाल महामहिम श्री ओ.पी. कोहली, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. सरला दीदी, ब्र.कु. मृत्युंजय, डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल, डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि, डॉ. आर.पी. गुप्ता तथा अन्य।

B.K. Mruthyunjay

योग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी जीवन का उपहार

B.K. Loganathan

Divine Wisdom For A Golden Era

Dr. B.K. Mamata

36वां अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर, 2015

Dr. B.K. Harindra

ज्ञान और शक्तियों की चैतन्य अवतार 'मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती'

परामर्श दाता

राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर जी
महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़ एवं अध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग

राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय जी
कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़ एवं उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग

राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू बहन जी
मुख्यालय संयोजिका, शिक्षा प्रभाग

प्रधान सम्पादक

राजयोगी डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल जी
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग

सम्पादक मण्डल

ब्र.कु. सुन्दरलाल जी, हरिनगर, दिल्ली
ब्र.कु. प्रो. एम.के. कोहली, गुड़गाँव
डॉ. ब्र.कु. ममता शर्मा, मेहसाना

प्रकाशक

एज्युकेशन विंग (R.E. & R.F.)
एवं ब्रह्माकुमारीज़

प्रकाशन

ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, शान्तिवन, आबू रोड

डिजाइनिंग और टाइप सेटिंग

ब्र.कु. चुनेश
वैल्यू एज्युकेशन ऑफिस, शान्तिवन, आबू रोड

अमृत सूची

- **सम्पादकीय** : मूल्यों को विकसित करना ही योग है
- Divine Wisdom For A Golden Era
- **RAKSHA BANDHAN** - A festival of Purity
- **दादी प्रकाशमणि जी** के प्रेरक अमृत वचन
- पर्यावरण के प्रति जागृति लाने हेतु शिक्षा प्रभाग का अभियान
- अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर
  योग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी जीवन का उपहार
- ज्ञान और शक्तियों की चैतन्य अवतार
  'मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती'
- समाज को स्वर्णिम दिशा देने में कारगर है मूल्य शिक्षा
- On the Teachers' Day
  Guru Gobind
- विभिन्न स्थानों पर हुई शिक्षा प्रभाग की सेवाओं की झलकियां
- 36वां अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर, 2015
- 36वां अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर की झलकियां
- शिक्षकों द्वारा होगा स्वच्छ और श्रेष्ठ भारत का पुनर्निर्माण
- मूल्य शिक्षा और अध्यात्म में प्रवेश प्रारम्भ, 2015-16

निवेदन

शिक्षा प्रभाग के सेवा समाचार फोटो सहित तथा स्व-रचित कविता, गीत, लेख इत्यादि वैल्यू एज्युकेशन सेंटर, आनंद भवन, शान्तिवन, आबू रोड के पते पर भेजकर अपना सहयोग प्रदान करें।

E-mail: shikshadarpanhq@gmail.com
Mobile No.: +91 94276-38887 / +91 94140 -03961 / +91 94263-44040

डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग, सुखशान्ति भवन (अहमदाबाद)

सम्पादकीय

डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़

मूल्यों को विकसित करना ही योग है

भारत देश की प्राचीनतम संस्कृति में योग का उल्लेख है। परन्तु यह योग किस विधि-विधान से किया जाए? इसकी योग्य परिभाषा क्या है? कहते हैं कि प्राचीन काल में शारीरिक बीमारियों से दूर रहने का साधन योग था। मानसिक संतुलन के लिए भी योग उत्तम साध्य था। आज तक हमने अपने शरीर को स्वस्थ रखने और मानसिक शान्ति के लिए कितने ही प्रकार के योग किए होंगे। आज संसार में योग-शिक्षा के अनेक संस्थान खुल गए हैं। योग ने अनेक प्रकार की बीमारियां दूर भी की है। लेकिन इसके साथ-साथ यह भी सत्य है कि प्राणायाम, जपयोग, तपयोग इत्यादि योग करने के बावजूद हमें जो लाभ मिलना चाहिए वह नहीं मिल पाया है। इसका मूल कारण है- अध्यात्म की कमी। योग और अध्यात्म को साथ जोड़ने पर जीवन में मूल्यों का विकास होता है। मूलत: मूल्यों का स्रोत है- सर्वोच्च सत्ता परमपिता परमात्मा। योग द्वारा उसका सान्निध्य और सामीप्य ही दैवी संस्कृति का विधि-विधान अर्थात् मूल्यों की पुन: स्थापना के कार्य की आधारशीला है।

योग भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण धरोहर है। यह एक प्राचीन विद्या है जो वर्तमान समय प्राय: लोप हो चुकी थी परन्तु परमात्मा ने यह समझाया है कि योग परमात्मा की याद है। समय-समय पर योग की अनेक व्याख्याएं हुई हैं। ज्ञान-योग, कर्म-योग, भक्ति-योग इत्यादि सभी योगों का मूलत: अर्थ एक ही था- 'रत' रहना या 'मय' होना। 'योग:कर्मेषुकौशलम्' इसका अर्थ है- ज्ञानमय होना, भक्तिमय होना यानि कि कर्म में डूब जाना, एकरस होकर कोई भी कार्य करना योग है। यहाँ परमात्मा में लीन हो जाना अर्थात् योग में होना। योग के विषय में कहा जाता है कि हमारे जीवन मूल्यों को विकसित करना ही योग है। ऐसा इसलिए है कि योग पूर्णतया आध्यात्मिक विद्या है जिससे आत्मा की शक्तियों का विकास होता है। मानव मूल्यों का विकास होता है। इससे आत्मा सशक्त बनती है। मानव जीवन कमल पुष्प समान बनता है। जीवन से बुराइयां दूर भागती हैं। इसके लिए स्वयं को एवं पिता परमात्मा को जान उसे प्रेम से याद करना आवश्यक है।

दादी जानकी जी के शब्दों में, ''परमात्मा ने मुझे राजयोग सिखाया है। उन्होंने मुझे कहा था कि स्वयं को आत्मा समझ पिता परमात्मा को याद करना ही राजयोग है। इससे हमारे अनेक जन्मों के विकर्म विनाश हो जाते हैं। राजयोग का अभ्यास करने से आत्मा शक्तिशाली बनती है तो शरीर की प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ जाती है।'' योग तो परमात्मा से जुड़ने का एक माध्यम है जिससे परमात्मा की शक्तियों को आत्मा में ग्रहण किया जा सके। आज योग का अर्थ ही बदल गया है। देहभान में होने के कारण मनुष्यों को देह को स्वस्थ रखने की कला योग समझ में आने लगी है। परन्तु यह अर्द्ध सत्य है। वास्तव में, तन के साथ-साथ मन की शक्तियों को भी बढ़ाना है तो योग को आधार बनाना पड़ेगा। इसमें तन और मन के कल्याण का समग्र दृष्टिकोण समाया हुआ है।

प्रतिस्पर्धा के इस दौर में स्वयं को संयमित रखना और शांत रहना बहुत ही आवश्यक है। भौतिकता की चकाचौंध ने हमें अपनी सभ्यता और संस्कृति से दूर कर दिया है। इसीलिए हम अपने आपको आध्यात्मिकता से दूर कर रहे हैं। आध्यात्मिकता वह शिक्षा है जिसको जीवन में धारण करने से मूल्यों का विकास होता है। आध्यात्मिकता की ओर जाने का सरल मार्ग है- राजयोग का अभ्यास। राजयोग वह योग है जो हमें परमात्मा से जोड़ता है। योग का अर्थ जोड़ना होता है। हम किसके साथ जुड़ना चाहते हैं? परमसत्ता के साथ, जो मूल्यों का स्रोत है। इसीलिए अभी यह बात प्रशंसनीय है जो यू.एन.ओ. में उठाई गई है। फिर भी विचारणीय है कि योग केवल शारीरिक नहीं, मानसिक भी है जो वास्तव में हमारी आंतरिक शक्तियों का विकास करें। हमारे जीवन मूल्यों का विकास करें। इस दिशा में विश्व के सभी देशों सहित संयुक्त राष्ट्र संघ ने सहमति प्रदान करते हुए 21 जून को **'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस'** मनाने की घोषणा की। यह एक पहल है जिसको विश्व के सभी संस्थानों, कार्यालयों ने शारीरिक क्रियाओं के द्वारा प्रस्तुत किया। 33 मिनट के इस कार्यक्रम में प्रारम्भ और अंत में ध्यान का भी समावेश हुआ। यह दिव्यता की ओर बढ़ने का पहला कदम है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा पूरे विश्व में इस प्रसंग को 20 मई से 21 जून तक और आने वाले वर्ष तक राजयोग ध्यान की प्रक्रिया के द्वारा आगे बढ़ाने का दृढ़ संकल्प लिया। एक यही संस्थान है जो योग के प्रयोग 1937 से करता आया है और जब तक पूरे विश्व में मानवीय मूल्यों की सम्पूर्ण रूप से प्रस्थापना हो जाएगी तब तक निरंतर कार्यरत रहेगा। इसमें आप सभी के स्नेहपूर्ण सहयोग एवं शुभ-भावना की अपेक्षा सादर प्रार्थित है।

Divine Wisdom For A Golden Era

B.K. Loganathan
Shantivan

The Education Wing of Rajyoga Education and Research Foundation and Prajapita Brahma Kumaris World Spiritual University together organized a five day Conference cum Meditation Retreat on **'Divine Wisdom For A Golden Era'** for "University and College Educators' at their Gyan Sarovar Campus, Mount Abu (Rajasthan), from 29th May to 2nd June 2015. More than 700 educators including, professors, deans, directors, vice chancellors, and others from various Colleges and Universities across India and Nepal participated in the discussions and contemplations of the conference. The Deputy Chief Minister of the Govt. of Delhi, Hon'ble Shri. Manish Sisodia was the major attraction of this conference.

Various Sessions organized during the conference included:

- Divine Wisdom for a Golden Era
- Science and spirituality are partners for peace and prosperity
- Spirituality- the guiding power in 21st Century
- Value Education & Spirituality – need of the Hour
- Sustainable Development through Spirituality
- Rajayoga Meditation for better human understanding and relationship
- New Vision and Mission of Education

Some of the major speakers from various Universities, Institutions and Other organizations were:

- Hon'ble Shri Manish Sisodia, Deputy Chief Minister, Govt. of Delhi
- Dr. Prafulla Kumar Mishra, Vice-Chancellor, North Odisha University, Cuttack.
- Dr. Vinay Kumar Pathak, Vice-Chancellor, Vardhaman Mahaveer Open University, Kota
- Prof. Srikrishna Deva Rao, Vice-Chancellor, National Law University, Cuttack.
- Prof. (Dr.) Ranbir Singh, Vice-Chancellor, National Law University, New Delhi.

Some of the eminent spiritual personalities from the Brahma Kumaris who graced the occasion were:

- ❖ Rajyogini Dadi Ratan Mohini, Joint Administrative Head
- ❖ Rajyogini Dr. Nirmala, Director, Gyan Sarovar
- ❖ Rajyogi B.K. Mruthyunjaya, Vice-Chairperson, Education Wing
- ❖ Rajyogini B.K. Sheilu, Senior Rajyoga Teacher
- ❖ Dr. B.K. Harish Shukla, National Co-ordinator, Education Wing
- ❖ Dr. B.K. Pandiamani, Director, Distance Education Programs
- ❖ Dr. R.P. Gupta, HQs. Co-ordinator, Value Education Programs
- ❖ B.K. Suman, Programme Co-ordinator, Education Wing

During these discussions many salient points assumed prominence on account of their significance in the present social and spiritual context. Some of the points demanding attention at the national level are:-

- ❖ In our earlier Indian system everyone developed a sense of social responsibility and had a sense of commitment so that the social requirement for all variety of work was balanced. But in the present system, this balance is disturbed. It is the inner spiritual awakening that accords the sense of dignity to all forms of duties. Education should bring out the inner awareness of the higher self.
- ❖ Whatever developments and conveniences we enjoy through science are the result of a dedicated system of education. At the same time, whatever difficulties and crimes we face in the society today are due to a serious lack of value education and spirituality in our system of education. It is time we gave a serious thought to this issue at the national level and emphasized the role of value and spirituality in our education at all levels of schools and colleges.
- ❖ The conference observed that in the modern times most of the crimes are committed by the so called educated persons. A lop sided system of education has failed to develop in them a true sense of morality and responsibility. The solution to the problem also lies in the education. Value education must become a part at every stage of education.
- ❖ Today people search peace, happiness and bliss through science but it can only be obtained through balance of science & spirituality and holistic education.
- ❖ Without value education a prosperous and healthy society cannot be created. For this purpose values have to grow in education spontaneously and naturally right from the Primary to the Secondary level and to the college and University level.
- ❖ At this critical juncture of human history the most significant spiritual awakening is taking place which is of great benefit to billions of people across the world. Surely it is the act of the Supreme Soul through Brahma & His Children called Brahma Kumars and Kumaris.
- ❖ It is this Real knowledge and awakening being given by the Eternal Father that brings inner light of understanding so that the evils of the society can be removed.
- ❖ Education should dispel the darkness of mind and should create better skills for harmonious living with the fellow beings and nature.
- ❖ Spirituality is a science of the self just as other science subjects like Physics and Chemistry and

this is applicable to all human beings irrespective of their religion and belief and level of worldly education.

- ❖ The need of the hour is to clean the mind. Through the Divine knowledge all the impurities in the mind like lust, anger, ego and others will be removed and self is sure to become a pure diamond and experience lasting peace and happiness.

RESOLUTION:

1. The participants of the conference highly appreciated the vision and Mission of Hon'ble Shri Manish Sisodia Dy. Chief Minister, Govt. of Delhi and his assurance of including Value Education and Spirituality in the school and college syllabii and establish thought laboratory in Delhi Schools and Colleges for an overall improvement in the present system of education empowering both the Teachers as well as Students.
2. It is proposed by the entire group of participants that the value education programmes should be conducted in association with other Universities to bring positive changes in the global level.
3. This elite gathering proposes to encourage the value education programmes of under graduate and post graduate and other certificate programmes in all colleges and Institutions with the support of Brahma Kumaris Education Wing.
4. It is proposed to set up a thought laboratory (meditation room) in every educational institution to empower students and teachers. This will help students to overcome their negative natures and addictions.
5. We unanimously appeal to the central government and all other state governments to take advantage of these value education programmes of the Brahma Kumaris and introduce them in all the Universities and Institutions of the country
6. Value education is the need of the hour and it should be imparted in India and abroad. For that the Education Wing of the Brahma Kumaris would extend their support by conducting International Conferences on these issues in the coming years.

RAKSHA BANDHAN

A festival of Purity

Let's celebrate the festival of Purity
By tying a Golden thread of Unity
It takes us close on the way to Spirituality
It says Purity is the best Personality
Unique bond of love fills everyone with Divinity
Through this God takes guarantee of Soul's Security
It says we all are Soul Brothers, the biggest Reality
It says to live life with Peace and Jollity
This bond keeps us safe under God's canopy
This thread is full of Divine Love and Sanctity
It is bestowed with the Blessings of Almighty Authority
It brings Heaven, the Land of Peace and Prosperity
It contains unlimited Love of Father of Humanity
This bond removes all sins and makes us Holy
It brings God's wisdom to transform Human into Deity
Let's celebrate this festival of Purity.

B.K. Chitra, Jaipur

दादी प्रकाशमणि जी
के प्रेरक अमृत वचन

ईश्वर पर समर्पित उसे ही कहा जा सकता है जो मनमत, परमत से पूर्णत: मुक्त हो और प्रत्येक कदम ईश्वर की श्रीमत अनुसार ही उठाता हो। ईश्वर पर समर्पित आत्मा को कभी व्यर्थ संकल्प, माया के संकल्प, कमजोरी के संकल्प नहीं आ सकते। वह आत्मा समर्थ संकल्प से भरपूर होगी। समर्पित अर्थात् ज्ञानी तू आत्मा। समर्पित अर्थात् कर्म, अकर्म और विकर्म की गुह्य गति को जानने वाले सदा विजयी। जानने वाले अगर कहें कि मेरे से आज यह विकर्म हो गया या कोई भूल हो गई तो एक भूल का सौ गुणा दण्ड मिलता है।

श्रीमत पर समर्पित अर्थात् सदा यह याद रहे कि हम तो निमित्त मात्र हैं। करने-कराने वाला ईश्वर है। निमित्त मात्र समझने से माया से बच जाते हैं। निमित्त मात्र समझकर चलने से निरहंकारी स्थिति का अनुभव सहज होता है। निमित्तपन का भाव ही अहम् पर विजय दिलाता है अर्थात् निरहंकारी बना देता है। मैं-मैं खत्म हो जाता है। जहाँ अहम् आता है, वहाँ कर्म का खाता बनता है। न कोई कर्म मेरा है, न मैं करता हूँ, ईश्वर करता है। जो ईश्वर कहे सो करना है। ऐसे मायाजीत रहने वाले सदा अपने कर्मों से दूसरों को भी प्रेरणा देंगे क्योंकि उनको यह ध्यान है जैसा कर्म मैं करूंगा मुझे देख दूसरे करेंगे। अगर हम सोचे कि हम निमित्त हैं तो हजारों को अपनी धारणा से प्रेरणा दे सकेंगे, तभी समझो कि हम समर्पित है। मायाजीत बनने के लिए निराकारी स्थिति बनाओ फिर निरहंकारी और निर्विकारी बनो। निराकारी स्थिति ही हमें कर्मातीत बनायेगी। निराकारी स्थिति संस्कारों पर विजय दिलायेगी, वातावरण में शान्ति की शक्ति फैलायेगी और हमें सम्पूर्ण निर्विकारी बना देगी। ईश्वर पर समर्पित होने का यही सार है।

पर्यावरण के प्रति जागृति लाने हेतु शिक्षा प्रभाग का अभियान

डॉ. आर.पी. गुप्ता
ज्ञान सरोवर

ब्रह्माकुमारीज़ के शिक्षा प्रभाग द्वारा इस वर्ष **'मूल्यों एवं आध्यात्मिकता द्वारा स्वस्थ एवं खुशनुमा जीवन'** और **'मन को स्वच्छ और धरती को हरा-भरा बनाये'** अभियान शुरू किया जा रहा है। यह अभियान दो चरणों में पूरा किया जाएगा। प्रथम चरण में हरियाणा तथा पंजाब, द्वितीय चरण में हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर के विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में कार्यक्रम चलेगा। अभियान का शुभारम्भ 6 सितम्बर, 2015 को पानीपत से होगा और समापन 3 नवम्बर, 2015 को जम्मू में एक भव्य समारोह के साथ किया जाएगा। इस अभियान के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रम करके प्रथम आने वाले 5 सेंटरों को शान्तिवन में सम्मानित भी किया जाएगा।

इस अभियान को सफल बनाने के लिए मुख्यालय से एक अभियान टीम भेजी जाएगी जो मुख्य स्थानों के विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विद्यालयों में विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होगी। इसके अलावा सभी सेवाकेन्द्र अपने-अपने क्षेत्र में भी एक अभियान टीम बनाकर इसे आगे बढ़ाते रहेंगे जिससे विद्यार्थियों में मूल्य शिक्षा और अध्यात्म के प्रति जागृति लाई जा सके।

अभियान का उद्देश्य अधिक से अधिक वृक्षारोपण करके पर्यावरण प्रदूषण को रोकना तथा आध्यात्मिक जागृति लाकर जीवन को स्वस्थ एवं खुशनुमा बनाना है।

ब्र.कु. मृत्युंजय
उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर –

योग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी जीवन का उपहार

जीवन में सुख, शान्ति और खुशी की चाह में मनुष्य ने एक लम्बा सफर तय किया है परन्तु भौतिक साधनों में सुख, शान्ति और खुशी के खोज की अतृप्त यात्रा में मनुष्य का जीवन पहले की अपेक्षा और अधिक अशान्त और दु:खमय होता जा रहा है। संचार क्रान्ति के वर्तमान युग में मनुष्य के हाथ में जब मोबाइल आया, तो जैसे उसे लगा कि सारी दुनिया उसकी मुट्ठी में कैद हो गई। इंटरनेट और ई-मेल ने मनुष्य की ज़िन्दगी में दखल देकर उसके जीवन से सुख, शान्ति और खुशी को तो एकदम बेदखल ही कर दिया है। वर्तमान समय आत्म-मूल्यांकन करके जीवन में सुख, शान्ति और खुशी की खोज के प्रति दृष्टिकोण को समकोण अर्थात् समदर्शी बनाने की आवश्यकता है तभी जीवन में अध्यात्म और भौतिकवाद में समन्वय स्थापित करके जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है।

अत्यन्त प्राचीन वैदिक काल से ही भारतीय तत्वदर्शी ऋषियों और मनीषियों ने उद्घोष किया है कि सुख, शान्ति और खुशी का स्रोत और रहस्य मनुष्य के मन में व्याप्त है। भौतिक वस्तुओं और साधनों में खुशी और शान्ति की खोज करना अपनी परछाई को पकड़ने जैसा है। संचार क्रान्ति ने मानवीय सम्बन्धों की मर्यादा और परिभाषा को बदल दिया है। सामाजिक, आर्थिक और मानसिक उथल-पुथल मच गई है और इससे मानवीय मूल्यों का सबसे अधिक ह्रास होने से जीवन में समस्याएं, दु:ख और नकारात्मक विचार तेजी से बढ़े हैं। यही कारण है कि मनुष्य के जीवन से सुख, शान्ति और चैन छिन-सा गया है। मनुष्य का मन ही उसके जीवन में चलने वाली सम्पूर्ण गतिविधियों जैसे सुख और दु:ख, हार और जीत तथा आशा और निराशा इत्यादि का मुख्य कारण है। इसलिए मनुष्य के जीवन को सुखी और स्वस्थ बनाने के लिए वर्तमान समय में ऐसे योगाभ्यास की आवश्यकता है जो मन को स्वस्थ और निरोगी बना सके।

नकारात्मक मनोदशा ही सर्व समस्याओं का कारण है

यह बड़ी खुशी की बात है कि 21 जून, 2015 को संयुक्त राष्ट्र संघ ने 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' घोषित करके जीवन में योग के महत्व को पुनर्स्थापित किया है। प्राचीन काल से ही योग हमारी संस्कृति और

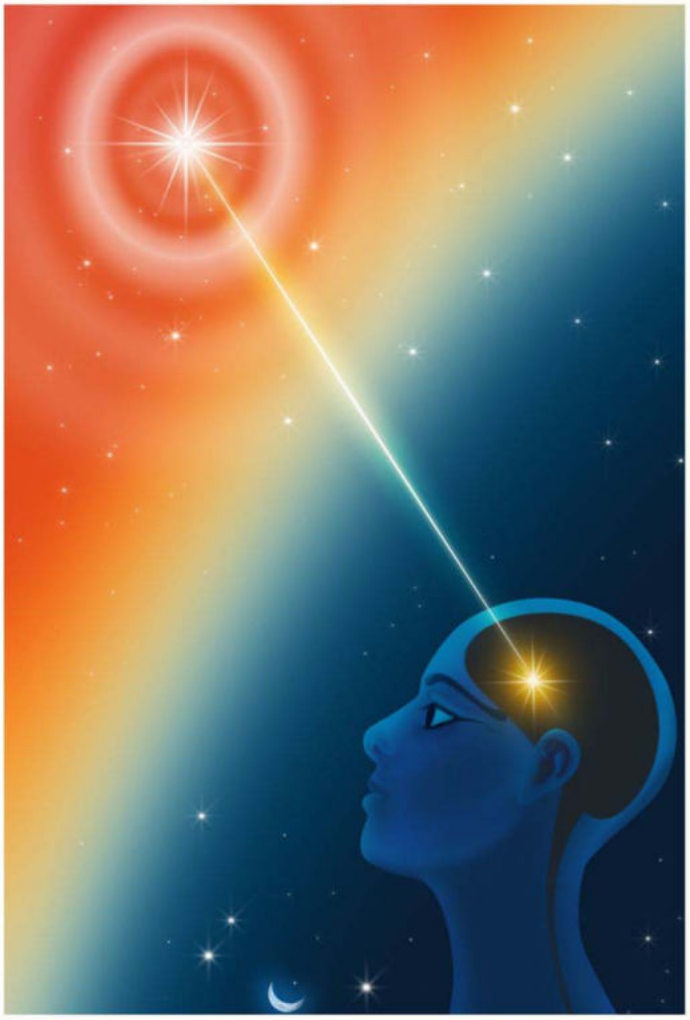

दिनचर्या का अभिन्न अंग रहा है परन्तु धीरे-धीरे भौतिकवादी संस्कृति के विकास के साथ ही योग के प्रति हमारा दृष्टिकोण भी बदल गया है। सबसे बड़ी भौतिकता है- 'स्वयं को पाँच तत्वों से निर्मित शरीर समझना।' जब मनुष्य स्वयं को आत्मा भूलकर शरीर समझने लगा तो योग के प्रति उसका दृष्टिकोण भी बदल गया। इसलिए योग के नाम पर शरीर को निरोगी बनाने वाले विभिन्न शारीरिक योगासन, शारीरिक

योग, संस्कृति और अध्यात्म हमारी गौरवशाली विरासत है जो मानव सभ्यता के लिए एक अनुपम योगदान है। योग का प्रयोग हमारे तन-मन को निरोग बनाकर दैनिक जीवन में आने वाली चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने की शक्ति प्रदान करता है। योगाभ्यास द्वारा समाज को स्वस्थ एवं सुखी बनाया जा सकता है। क्योंकि योगाभ्यास से मनुष्य की आंतरिक चेतना का विकास होता है। इससे मन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है तथा सम्पूर्ण सुस्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।

मुद्राएं और हठयोग प्रचलित हो गए। वर्तमान समय में प्रचलित अधिकांश योगाभ्यास केवल शारीरिक योगाभ्यास बनकर रह गए हैं परन्तु योग का वास्तविक अर्थ होता है- 'दो अलग-अलग अस्तित्व वाली संख्या का योग।' आज ऐसे योग की आवश्यकता है जो इस भौतिक शरीर को संचालित करने वाली चैतन्य सत्ता 'आत्मा' को स्वस्थ और पवित्र बनाते हुए परमात्मा से मिलन कराकर सच्ची सुख, शान्ति और खुशी की अनुभूति करा सके।

भारत का प्राचीन सहज राजयोग

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था में सिखाये जाने वाला राजयोग भारत का सबसे प्राचीन और परमात्मा द्वारा सिखाया जाने वाला योग है। यह आत्मा में व्याप्त दु:ख और पाप के पाँच मूल कारणों- काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को दूर करने वाला एकमात्र योगाभ्यास है। जबकि कोई भी प्रचलित योगासान ऐसा नहीं है जो मन को मोह या अहंकार से मुक्त कर सके। वर्तमान समय में ऐसे ही योगाभ्यास की आवश्यकता है जो मनुष्य के मन को स्वस्थ और निरोगी बना सके। क्योंकि श्रीमद् भगवद्गीता में एक बात बहुत ही स्पष्ट रूप से कही गई है- 'मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु और सबसे बड़ा मित्र उसका मन ही होता है।' जब मनुष्य की मनोदशा अर्थात् मन की दशा सकारात्मक होती है, तो मन परमात्मानुभूति का माध्यम बनकर जीवन के महान लक्ष्य जीवनमुक्ति की अनुभूति कराने का साधन बन जाता है परन्तु जब मनुष्य के मन की दशा नकारात्मक होती है तो मन जीवन में रोग, शोक और दु:ख का कारण बन जाता है। इसलिए मन को स्वस्थ और प्रसन्न बनाने वाला योग ही यथार्थ योग है और इससे ही जीवन में सच्ची सुख, शान्ति और खुशी आती है।

श्रीमद् भगवद्गीता में ही है सच्चा समाधान

आज समाज में चारों ओर नकारात्मक वातावरण उत्पन्न करने वाले कारण विद्यमान हैं। अत: नकारात्मक प्रवृत्ति वाले मनुष्य ही दुर्जन हैं, जिनकी बात को सुनने तथा संग को शास्त्रों में नर्क का मार्ग बताया गया है। वर्तमान समाज में ऐसा कोई एक भी व्यक्ति नहीं है जिसका मन नकारात्मक वृत्तियों जैसे- मानसिक तनाव, दु:ख, निराशा, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार इत्यादि से पूर्णत: मुक्त हो। इसलिए किसी भी मनुष्य द्वारा दिए गए उपदेश, प्रवचन या धर्म की बातों का मन पर सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ सकता है। सम्भवत: इसलिए श्रीमद् भगवद्गीता में परमात्मा ने स्पष्ट कहा है कि कलियुग में मैं यज्ञ, तप, दान इत्यादि से नहीं प्राप्त हो सकता। नकरात्मक मनोदशा की अवस्था में धर्म के अनुकूल आचरण करना असम्भव होता है। अत: वर्तमान समाज में विद्यमान घोर नकारात्मक वातावरण ही श्रीमद् भगवद्गीता में वर्णित अति धर्मग्लानि का समय है और परमात्म-अवतरण का कालखण्ड है। श्रीमद् भगवद्गीता में इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि स्वयं परमात्मा ही मनुष्य को राजयोग सिखाकर मुक्ति और जीवनमुक्ति का मार्ग बताते हैं।

सकारात्मक मनोदशा ही सच्ची योगानुभूति है

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर पुन: सर्व मनुष्यात्माओं को स्वयं परमात्मा द्वारा सिखाये गए राजयोग के माध्यम से सकारात्मक मन की अनुभूति करने के लिए ब्रह्माकुमारी संस्थाओं में एक विशेष अनुभूति सत्र आयोजित किया गया है। इस पूर्णत: नि:शुल्क कार्यक्रम में समाज के सभी वर्ग के लोगों को सम्मिलित होने के लिए सादर ईश्वरीय निमंत्रण है। राजयोग सीखने हेतु बढ़ाया गया यह कदम जीवन में बहुत बड़ा सकारात्मक परिवर्तन लाकर आपको सुख, शान्ति और खुशी की अनुपम सौगात प्रदान कर सकता है और आपके जीवन की दशा और दिशा को बदल सकता है। कर्म के परिणाम से मुक्त होकर जीवन को सुखमय बनाने के लिए पुरुषार्थ करना प्रत्येक मनुष्यात्मा का ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार है। योग के प्रयोग का जीवन पर बहुत ही चमत्कारिक प्रभाव पड़ता है। राजयोग का साप्ताहिक कोर्स करने तथा कुछ दिनों तक इसका नियमित अभ्यास करने से जीवन में मानसिक तनाव, दु:ख, निराशा, सम्बन्धों में टकराव इत्यादि सभी समस्याओं के उत्पन्न होने का मूल कारण स्पष्ट रूप से समझ में आ जाता है।

हमारे जीवन में वर्तमान समस्याएं और सम्बन्धों में तनाव और टकराव का मूल कारण कोई व्यक्ति या परिस्थिति नहीं है बल्कि सकारात्मक मनोदशा का अभाव है। राजयोग का जीवन में योगाभ्यास प्रारम्भ करते ही मन में व्याप्त नकारात्मक मनोवृत्तियों की पहचान होने लगती है। प्रत्येक मनुष्य में नकारात्मक कर्म और व्यर्थ चिन्तन के अनुसार उसके मन में नकारात्मक मनोवृत्तियों का निर्माण होता है। अत: राजयोग द्वारा आत्म-अनुभूति ही मन को नकारात्मक वृत्तियों से मुक्त करने का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है।

तो आइये! इस सृष्टि के महापरिवर्तन की पावन बेला में स्वयं को नकारात्मक वृत्तियों से परिवर्तन कर एक नए सुखमय समाज की पुनर्स्थापना के लिए कदम बढ़ायें। सर्व मनुष्यात्माओं को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर परमात्मा की ओर से यही ईश्वरीय संदेश है।

ज्ञान का प्रकाश जीवन को आलोकित करता है। परन्तु मानवता के इतिहास में ऐसी भी महान विभूतियां हुई हैं जो स्वयं ज्ञान का प्रकाश बनकर इस संसार को इतना आलोकित कर देती है कि ज्ञान प्रतिमूर्ति के रूप में उनकी स्मृतियां युगों-युगों तक अज्ञानता के तिमिर का शमन करके ज्ञान के प्रकाश से मानव हृदय को आलोकित करती रहती हैं। उनकी उपमा के लिए उपयुक्त शब्द की सामर्थ्य सीमायें समाप्त हो जाती हैं। ऐसी ही भारतीय मनीषा की शिरोमणि प्रतिनिधि, ईश्वरीय ज्ञान की कालजयी अवतार, रूद्र-यज्ञ-रक्षक मातेश्वरी श्री जगदम्बा ने इस धरा पर युगान्तकारी परिवर्तन का संवाहक बनकर हजारों ब्रह्मावत्सों के मानस-पटल पर परमात्मा शिव के ईश्वरीय ज्ञान की जो अमिट छाप लगाई है, वह वर्तमान समय में भी लाखों मनुष्यात्माओं के जीवन को आलोकित कर रहा है। ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमात्मा शिव स्वयं शरीर धारण नहीं कर सकते हैं परन्तु मातेश्वरी जगदम्बा के रूप में परमात्मा ने इस संसार में ब्रह्मावत्सों तथा लाखों मनुष्यात्माओं को मातृत्व की सुखद आंचल की छत्रछाया की पालना करके अपने ममतामयी स्वरूप को प्रकट किया।

ज्ञान और शक्तियों की चैतन्य अवतार
'मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती'

धर्म का सत्य मर्म

आध्यात्मिक ज्ञान और शक्तियों की चैतन्य दिव्य मूर्ति मातेश्वरी श्री जगदम्बा, कर्मयोग की ज्ञान-गंगा बहाकर आध्यात्मिक क्षेत्र में पुरुष प्रधान वर्चस्व के मिथक को तोड़कर सारे संसार को यह संदेश देने में सफल रही कि आध्यात्मिक पुरुषार्थ और साधना के लिए त्याग, तपस्या और आत्म-अनुभूति ही यथार्थ सत्य है, लिंग-भेद और बाह्य पहचान का कोई महत्व नहीं है। मम्मा ने जिस समय आध्यात्मिक साधना द्वारा अज्ञानता में भटकते समस्त मानव के हृदय को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करने के पथ को चुना था, सन् 1936 का वह कालखण्ड एक नारी के लिए महान साहस भरा फैसला था। क्योंकि उस समय का पुरुष प्रधान समाज धर्म की सुरक्षा के नाम पर नारियों को घर के पर्दे के अंदर कैद करना ही अपना छद्म धर्म समझता था। श्री मातेश्वरी जी ने राजयोग की साधना और सहनशीलता से सारे संसार के सामने धर्म के सत्य मर्म को स्पष्ट किया कि आत्म-अनुभूति और परमात्म-अनुभूति से ही सत्य धर्म की स्थापना होती है, नारियों को पर्दे से ढककर नहीं। आध्यात्मिक साधना और ईश्वरीय ज्ञान द्वारा अज्ञानता में भटकती दु:खी और पीड़ित समस्त मानव जाति को जीवनमुक्ति प्रदान करने का मम्मा का क्रान्तिकारी फैसला मानवता के इतिहास को बदलने वाली एक महान घटना थी। क्योंकि इसने नारियों के लिए पूर्णत: निषेध कर दिए गए धर्म के प्रवेश-द्वार को नारियों के लिए खोल दिया। उन्होंने अपने दिव्य व्यक्तित्व के चुम्बकीय आकर्षण से हजारों नारियों को स्वयं परमपिता परमात्मा द्वारा इस सृष्टि के परिवर्तन के महान कार्य के लिए निमित्त बनाकर जो नव-सृजन की राह दिखायी, वह वर्तमान में भी नारी-सत्ता द्वारा संचालित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के रूप में समस्त संसार को आलोकित कर रहा है।

वीणावादिनी सरस्वती की चैतन्य अवतार

अविभाजित भारत में सन् 1919 में अमृतसर के एक सामान्य परिवार में जन्म लेकर पितृ-स्नेह से वंचित परन्तु अध्यात्म के शिखर को स्पर्श करने की मातेश्वरी श्री जगदम्बा की जीवन-यात्रा बहुत ही प्रेरक है। मातेश्वरी जी के समाधिस्थ होकर उच्चारित 'ओम् ध्वनि' में आध्यात्मिक तरंगों का इतना शक्तिशाली प्रवाह होता था कि 'ओम्' की धुनी लगाते ही पूरे वातावरण में गहन शान्ति छा जाती थी। इसके सम्पर्क में आने वाले लोग ध्यान की अवस्था में चले जाते थे। इसलिए मातेश्वरी जी 'ओम् श्री राधे' के नाम से

विख्यात हो गई। 'ओम् श्री राधे' से 'यज्ञ माता' के दिव्य व्यक्तित्व के रूप में महापरिवर्तन मातेश्वरी जी के 'वीणावादिनी सरस्वती' के चैतन्य रूप में इस धरा पर साक्षात् अवतरण की एक अद्भुत कहानी है।

एक नये इतिहास का सृजन

आपकी लौकिक माता से लेकर बच्चे, युवा, वृद्ध सभी आपको 'मम्मा' के रूप में सम्बोधित करते थे और आपने भी 'यज्ञ माता' की बेहद दृष्टि से आध्यात्मिक ज्ञान से सर्व की पालना करके नारी सत्ता के आध्यात्मिक उत्थान की एक नई गौरव गाथा का सृजन कर दिया। मातेश्वरी जगदम्बा के पावन सान्निध्य से प्रेरित होकर लाखों मनुष्यात्माओं के ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमात्मा शिव के नई सतयुगी दुनिया की पुनर्स्थापना के महान परमात्म कार्य में स्वयं को समर्पण करने की घटना इतिहास में अन्यत्र कहीं नहीं मिलती है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की आध्यात्मिक त्याग, तपस्या, धारणा और सेवा के क्षेत्र में पूरे विश्व में जो विशिष्ट पहचान है, वह मातेश्वरी श्री जगदम्बा के दिव्य व्यक्तित्व और आध्यात्मिक मार्गदर्शन का ही परिणाम है। मातेश्वरी जी के पावन सानिध्य में पलने वाली आत्मायें अपने प्रखर साधना और तेजस्वी स्वरूप से वर्तमान समय में अज्ञानता के अंधकार में भटकती समस्त मानव जाति को परमात्म-अनुभूति की यथार्थ पहचान देकर उनके दिखाये गये साधना के पथ पर निरंतर अग्रसर हैं।

वरदानी दिव्य दृष्टि

आध्यात्मिक साधना के मार्ग में मन और बुद्धि को परमात्मा के ऊपर एक बार समर्पित करने के बाद साक्षीद्रष्टा बनकर ईश्वरीय सेवा में इनका प्रयोग करने के लिए महान आध्यात्मिक विवेक और निरंतर अशरीरी बनकर परमात्म-शक्तियों की अनुभूति करते रहने का पुरुषार्थ आवश्यक है। मातेश्वरी जगदम्बा ने सदा निराकर ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमात्मा शिव द्वारा अपने साकार मानवीय माध्यम पिताश्री ब्रह्मा के माध्यम से दिये गये 'श्रीमत' का तत्क्षण पालन किया। मातेश्वरी जी को 'मनमत' और 'श्रीमत' में अत्यंत सूक्ष्म अंतर को स्पष्ट समझने के लिए 'वरदानी दिव्य दृष्टि' प्राप्त थी। यह शक्ति बहुत ही विरले साधकों को प्राप्त होती है। इस दिव्य दृष्टि के आधार से वे अपने सम्पर्क में आने वाली किसी भी मनुष्यात्मा के छिपी हुई विशेषताओं को पहचानकर उसे पत्थर से तराशकर हीरा बना देती थी। वे ईश्वरीय ज्ञान और कर्मों के गुह्य रहस्य को सहज ढंग से स्पष्ट करने की कला में अत्यंत प्रवीण थी। इसके कारण ही उन्होंने स्वयं 'निर्माण' और 'निर्मान चित्त' बनकर सर्व मनुष्यात्माओं को साधना द्वारा साधक बनकर साधनों के निमित्त भाव से प्रयोग करने का महान पाठ पढ़ाया। मातेश्वरी जगदम्बा द्वारा अपने जीवन में किये गये 'कर्म योग' का सफल प्रयोग, लाखों लोगों के लिए गृहस्थ जीवन में 'जीवन मुक्ति' प्राप्त करने का सहज उदाहरण बना है। इससे मातेश्वरी जी ने संन्यास की परम्परागत अवधारणा को ही बदल दिया कि स्थूल कार्यों को न करने का संकल्प लेकर जंगल या पहाड़ की गुफाओं या कन्दराओं में जाकर बैठ जाना ही संन्यास और साधना नहीं है। बल्कि सच्ची साधना है- इस संसार में गृहस्थ जीवन जीना तथा सच्चा संन्यास है- मन और बुद्धि से पांच विकारों काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार का सम्पूर्ण परित्याग। इससे ही संसार में सामान्य जीवन व्यतीत करने वाले स्त्री/पुरुष को आध्यात्मिक जीवन जीने की प्रेरणा प्राप्त होती है तथा समाज में एक बड़ा क्रान्तिकारी परिवर्तन होता है।

कर्म और योग का अद्भुत समन्वय

ब्रह्मा की मानस-पुत्री श्री मातेश्वरी जगदम्बा जी के जीवन में 'योग' और 'कर्म' के संतुलन का अद्भुत समन्वय था। गीता के अनुसार राजयोग साधना की यही पराकाष्ठा है। जब किसी साधक की चेतना 'उच्च पराचेतना' को स्पर्श कर लेती है तो 'योग: कर्मेषुकौशलम्' की सिद्धि प्राप्त हो जाती है। ऐसे साधक में किसी भी क्षण अपने संकल्प को 'शक्ति' में परिवर्तित करने की क्षमता विकसित हो जाती है। मातेश्वरी जी ने स्वयं परमपिता परमात्मा शिव द्वारा सिखाये गये राजयोग से 'कर्म योग' द्वारा 'जीवन मुक्ति' प्राप्त करके कर्मभोग पर विजय प्राप्त कर ली थी। मम्मा अभय बनकर मृत्यु के भय पर 'विजयी भव' का वरदान प्राप्त करके कैन्सर जैसी असाध्य और असह्य शारीरिक बीमारी के भय को परास्त करते हुए अन्तिम श्वांस तक मानवता की सेवा में तत्पर रहीं। मातेश्वरी जी अपने नश्वर भौतिक शरीर का परित्याग करने के कुछ क्षण पूर्व तक ईश्वरीय ज्ञानामृत की पावन ज्ञान-गंगा बनकर उपस्थित मनुष्यात्माओं को पवित्र बनाने के पुण्य कर्म में संलग्न रहीं।

सच्ची श्रद्धांजलि

24 जून, 1965 को मातेश्वरी जी ने स्वयं को शारीरिक कर्मेन्द्रियों की सीमाओं और बंधनों से मुक्त कर 'सम्पूर्णता' को प्राप्त कर महाप्रयाण की यात्रा पर प्रस्थान किया। मातेश्वरी श्री जगदम्बा की सूक्ष्म उपस्थिति आज भी ब्रह्मावत्सों को जीवन-पथ पर अचल-अडोल होकर कर्मयोग के लिए प्रेरणा प्रदान कर रही है। मातेश्वरी श्री जगदम्बा जी के दिखाये गये कर्म-साधना के पथ पर चलते हुए राजयोग की साधना द्वारा रूद्र-ज्ञान यज्ञ-रक्षक, आज्ञाकारी और निरहंकारी बनकर मानवता की सेवा में समर्पित रहें, यही हम ब्रह्मावत्सों की उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

डॉ. ब्र.कु. हरीन्द्र, वाराणसी

दीक्षांत समारोह

ब्र.कु. चुनेश, शान्तिवन

समाज को स्वर्णिम दिशा देने में कारगर है मूल्य शिक्षा

विद्यार्थियों को आध्यात्मिक शिक्षा के साथ-साथ मूल्य शिक्षा की डिग्री देना इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए अत्यन्त गौरव और सम्मान की बात है। इस ज्ञान को जितना हम धारण करेंगे, उतना यह हमारे व्यवहार से स्पष्ट दिखाई देगा। यह आध्यात्मिक और मूल्य शिक्षा जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

उक्त उद्‌गार ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका **दादी रतनमोहिनी** ने वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय और ब्रह्माकुमारीज़ शिक्षा प्रभाग के प्रथम दीक्षांत समारोह में व्यक्त किए। यह दीक्षांत समारोह दिनांक 24 मई, 2015 को शान्तिवन परिसर में आयोजित किया गया। इस समारोह में सर्टिफिकेट और पी.जी. डिप्लोमा पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण लगभग 500 से अधिक विद्यार्थियों को डिग्री प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष **ब्र.कु. मृत्युंजय** ने कहा कि मूल्य शिक्षा हमारे व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करके हमें जीवन जीने की कला सिखाती है। घर, समाज, देश और पूरे विश्व में सुख-शान्ति की पुनर्स्थापना ईश्वरीय ज्ञान से ही सम्भव है।

शिक्षा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक **डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल** ने कहा कि मूल्यनिष्ठ शिक्षक ही समाज को सकारात्मक दिशा देने के लिए मूल्यवान नागरिकों को तैयार कर सकता है जिससे पूरा भारतवर्ष मूल्यनिष्ठ और स्वर्णिम बन सकता है।

मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा कोर्स के निदेशक **डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि** ने कहा कि वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय में सर्टिफिकेट और पी.जी. डिप्लोमा का पाठ्यक्रम चल रहा है। आगामी समय में यहाँ एम.एस.सी. तथा एम.बी.ए. कोर्स शुरू करने का लक्ष्य है। अभी तक इन पाठ्यक्रमों से लगभग 16 हजार भाई-बहनें लाभान्वित हो चुके हैं।

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय संयोजिका **डॉ. रश्मि बोहरा** ने कहा कि मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा से चरित्र श्रेष्ठ बनता है और जीवन का दिव्यीकरण होता है। इस शिक्षा को पूरे विश्व में तीव्र गति से क्रियान्वित करने की आवश्यकता है क्योंकि इस ज्ञान को धारण करके हम अपने जीवन को सुख, शान्ति और सम्पन्न बना सकते हैं।

उन्होंने कहा कि मैं ब्रह्माकुमारीज़ के श्रेष्ठ कार्यों में निमित्त बनकर अपना भाग्य बनाना चाहती हूँ तथा राजस्थान के सभी जिलों में संचालित सेवाकेन्द्रों में सहयोग देना चाहती हूँ।

इस समारोह को मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा कोर्स के मुख्यालय संयोजक **डॉ. आर.पी. गुप्ता** ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम के अंत में सभी विद्यार्थियों को डिग्री प्रमाण-पत्र व मैडल दिए गए। कार्यक्रम के प्रारम्भ में ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा माननीय अतिथियों को पुष्पगुच्छ प्रदान कर स्वागत किया गया। तत्पश्चात् शान्तिवन के मधुर वाणी ग्रुप ने स्वागत गीत और जयपुर की कुमारी दर्शिता ने स्वागत डांस प्रस्तुत किया। इस समारोह में राजस्थान में मूल्य शिक्षा द्वारा हो रही सेवाओं की सचित्र वीडियो भी दिखाई गई।

दीक्षांत समारोह आरम्भ होने से पूर्व, राजस्थान से आये हुए सभी विद्यार्थियों ने 'मूल्यनिष्ठ शिक्षा एवं आध्यात्मिकता' का संदेश देने के लिए एक भव्य रैली निकाली। कार्यक्रम का धन्यवाद प्रस्ताव कोटा की **ब्र.कु. उर्मिला बहन** ने किया। कार्यक्रम का सफल संचालन जयपुर से पधारे **ब्र.कु. मुकेश** ने किया।

On the Teachers' Day

Guru Gobind

BK Prof. Ved Guliani, Hisar

Once addressing the American elite Swami Vivekananda highlighted the essential requirements of a learner as well as a teacher of spirituality. For the learner the quality of purity, a real thirst for knowledge and perseverance are most essential while for the teacher these requirements are his depth of knowledge of the scriptures, his being sinless and his sincere motive of serving the humanity without any desire for name, fame, wealth or comforts.

A teacher of spirituality, the Swami said, must have the knowledge which is not based on any hearsay. He should know the secrets of the scriptures and their true significance in man's life as well as daily routine. He should be a good orator and teacher of his subject but his interest should be more in learning than impressing his listeners. Those who deal in words too much and allow the mind to sway away with the force of words tend to lose the very spirit of learning. In simple words a teacher must know and understand the spirit of scriptures.

There are teachers who do not attempt to attain perfection in their field, but they are desirous to show their learning for appreciation, little realizing that spirituality is a noble and elevated field where just 'leaf-counting' won't do. Teaching the values of Christianity or Hinduism would not require of a teacher to know the life history of Christ or Krishan but the ideals they expounded in their daily life and the moral and ethical values that they cherished at all times in their practical life in the society. A teacher is in fact expected to feel and display, in his conduct, those virtues and values.

A major characteristic of a spiritual teacher is his being sinless. In spiritual sciences it is believed that the spiritual light, so essential for a teacher, can never be found in an impure soul. "Blessed are the pure in heart, for they shall see God" is often said. For a teacher it is said that 'we must first see what he is than what he says'. Of course what can he transmit if he has not that spiritual power in him? In fact the teacher has an unseen communication with his learner as some power, real and tangible, goes out from him and begins to grow in the mind of the learner.

A spiritual teacher does not teach his learner for any ulterior motive, for name or fame, but he teaches only with the divine love for instilling the spiritual knowledge in his disciples and serving the Supreme thereby. Any other motive, be it for money and material wealth or any popularity is sure to destroy the element of spirituality and thus negate him the very title of being a Guru.

In nutshell the disciple's relationship with the teacher is that of ancestor and descendent. The teacher in our culture is no less than spiritual ancestor while the learner is supposed to be his spiritual descendent. It is for this grand and majestic tradition of Guru-Shishya relationship that the spiritual teacher in our culture is equated with Gobind (God). And rightly so, the teacher is the only person in one's life who come anywhere near the Supreme.

We attribute the virtues of 'Satyam-Shivam-Sundram' with God meaning thereby that He is the ultimate truth, the supreme benefactor and the most pure. From this point of view in our culture a teacher of spirituality, often addressed as 'Guru' is said to be sinless, knowledgeful and selfless well-wisher of humanity. We also often call the Almighty as 'Incorporeal-Viceless-Egoless' (Nirakari-Nirvikari and Nirahankari). From this point of view also an ideal spiritual teacher qualifies for this status. He must be universally available to all his students without any discrimination of social or economic status. He is as discussed above sinless and free of all vices of the material world and finally he does not have any desire for name or fame or any greed for material comforts and luxuries.

Hence where is it not fair to equate him with the Supreme soul? The muse has rightly worshipped him when he says:

Guru Gobind dono khare, kake lagun paye, Balihari Guru aapki, Gobind diyo milaye.

(When the teacher and God are both before me, I am at a loss whom should I pay my respect first. But then I bow before my teacher as it is he who led me to God.)

विभिन्न स्थानों पर हुई शिक्षा प्रभाग की सेवाओं की झलकियां

शान्तिवन (राजस्थान)

वैंगलुरू (कर्नाटक)

तकतपुर (उड़ीसा)

विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश)

पलक्कड़ (केरल)

गांधी नगर (गुजरात)

साक्री (महाराष्ट्र)

अजमेर (राजस्थान)

विभिन्न स्थानों पर हुई शिक्षा प्रभाग की सेवाओं की झलकियां

चेन्नई (तमिलनाडु)

शान्तिवन (राजस्थान)

धनवाद (झारखण्ड)

शान्तिवन (राजस्थान)

रांची (झारखण्ड)

शान्तिवन (राजस्थान)

मेहसाना (गुजरात)

भोपाल (मध्यप्रदेश)

डॉ. ब्र.कु. ममता मेहसाना

36वां अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर, 2015

परमपिता परमात्मा के बेहद घर शान्तिवन परिसर में 20 से 26 मई, 2015 को ब्रह्माकुमारीज़ के शिक्षा प्रभाग द्वारा 36वां अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर सम्पन्न हुआ। इस शिविर में भारत वर्ष से लगभग 3500 बाल प्रतिभागी उपस्थित थे। 10 से 15 वर्ष की आयु वाले सभी बच्चों के लिए शिक्षा प्रभाग द्वारा विभिन्न प्रकार की बौद्धिक, सृजनात्मक एवं खेलकूद स्पर्धाओं का आयोजन किया गया।

20 मई, 2015 की संध्या 6 से 8 बजे तक सभी बच्चों का स्वागत किया गया। उसी समय शिविर का उद्घाटन कार्यक्रम भी हुआ। बाल व्यक्तित्व शिविर का दीप प्रज्ज्वलन कर **दादी रतनमोहिनी जी** ने बच्चों को आशीर्वचन देते हुए कहा कि इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आने वाले सभी बच्चे प्रतिदिन अपने लौकिक जीवन में होते हुए भी परमात्मा की शिक्षाएं प्राप्त करते हैं इसलिए भाग्यशाली बच्चे हैं। यह बच्चे मूल्य और आध्यात्मिकता की शिक्षा से आने वाली पीढ़ी के लिए एक उदाहरण स्वरूप बनेंगे। आपने कहा कि ब्रह्मा बाप ने हमें भी ऐसी ही शिक्षा दी है जिससे हमारा जीवन इतना अच्छा है, उत्तम है। इस विश्व विद्यालय की शिक्षा से सुख, शान्ति, पवित्रता इत्यादि गुणों से सम्पन्न बनते हैं। आप भी यहाँ आकर इन्हीं गुणों का श्रृंगार करके जाएंगे। प्रतिदिन यहाँ अच्छी-अच्छी बातों को सीखेंगे और जीवन में धारण करेंगे।

उद्घाटन समारोह में **पद्मश्री डॉ. भक्तवत्सलम्** (चेयरमेन, के.जी. ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स और के.जी. ग्रुप हॉस्पिटल, कोयम्बतुर) भी उपस्थित थे। आपने भी बच्चों के व्यक्तित्व विकास शिविर के आयोजन के लिए बधाइयां दीं। आपने भी कहा कि बच्चे आने वाले उज्जवल भविष्य की नींव हैं। इस संस्था से बच्चों का जुड़ना भी अपने आप में एक उपलब्धि है।

ब्र.कु. मोहिनी बहन (अध्यक्ष, ग्राम विकास प्रभाग) ने भी दादी प्रकाशमणि जी की याद दिलाते हुए बच्चों प्रति उनके प्यार की बातों को दोहराते हुए कहा कि दादी जी बच्चों के लिए जो कहती थी वो करती थी। आज भी बच्चों को वही पालना मिलेगी, जो मिलती आई है।

ब्र.कु. मृत्युंजय (उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग) ने भी बच्चों को देखकर खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि बच्चे दिल के सच्चे होते हैं। सभी बच्चे सात दिन तक शिविर में एकजुट होकर रहेंगे। बाबा की शिक्षाओं को जीवन में धारण करेंगे।

ब्र.कु. डॉ. हरीश शुक्ल (राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग) ने बच्चों के कार्यक्रम की उपलब्धियां बताते हुए कहा कि 1978 से यह शिविर निरंतर रूप से आयोजित हो रहा है। इस शिविर से निकले हुए बच्चे आज संस्था में समर्पित रूप से अपनी सेवाएं दे रहे हैं तो कुछ समाज में अच्छी पोस्ट-पोजीशन पर कार्यरत हैं। अपना उत्तरदायित्व शान्ति से निभा रहे हैं। कार्यक्रम में शिक्षा प्रभाग के सभी सदस्य उपस्थित थे।

शिविर के दौरान बच्चों के लिए दो ग्रुप बनाये गये थे- एन्जिल एवं डायमण्ड। दोनों ग्रुप के बच्चों के लिए निबंध, वक्तृत्व, क्वीज़, कहानी लेखन, योगासन, एकपात्रीय अभिनय, गीत इत्यादि स्पर्धाओं का आयोजन किया गया। खेलकूद स्पर्धाओं का भी आयोजन किया गया। प्रतिदिन विभिन्न विषयों पर वक्ताओं के क्लास, प्रश्न-उत्तर भी रखे गए। प्रतिदिन बच्चों के लिए राजयोग मेडीटेशन के क्लास भी रखे गए। पिकनिक का आयोजन भी किया गया। स्पर्धाओं में विजेता बच्चों को पुरस्कार भी दिए गए। सबसे अधिक पुरस्कार प्राप्त करने वाले सेंटर्स को भी पुरस्कार दिए गए जिसमें प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले सेंटर थे मेहरौली (दिल्ली), महुधा (गुजरात), कन्जावाला (दिल्ली)। द्वितीय स्थान नारनोल, दिल्ली और तृतीय स्थान शान्तिवन, आबू रोड को प्राप्त हुआ। सभी बच्चों को संस्था की ओर से ईश्वरीय सौगात दी गई। प्रतिदिन रात्रि को सांस्कृतिक कार्यक्रम भी बच्चों ने प्रस्तुत किए। शिविर में व्यक्तित्व विकास के सभी पहलुओं का समाविष्ट किया गया। 27 मई को बच्चे आबू दर्शन के लिए गए और 28 मई के दिन बच्चों ने व्यक्तित्व सम्पन्न बनने की प्रेरणा लेकर अपने सेवा स्थान के लिए प्रस्थान किए।

36वाँ अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर की झलकियां

शिक्षकों द्वारा होगा स्वच्छ और श्रेष्ठ भारत का पुनर्निर्माण

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के शिक्षा प्रभाग, आबू पर्वत द्वारा शान्तिवन परिसर में 19 से 23 मई, 2015 तक उच्च माध्यमिक शिक्षकों का महासम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में भारत एवं नेपाल से लगभग 7000 शिक्षक पधारे। दिनांक 19 मई को शाम तक सभी मेहमानों का आगमन हुआ। स्वागत समारोह शाम 6 बजे डायमण्ड हॉल में आयोजित किया गया। मधुर वाणी ग्रुप द्वारा 'शिक्षकों का शान्तिवन से सादर है आह्वान' गीत के माध्यम से स्वागत किया गया।

डॉ. आर.पी. गुप्ता ने स्वागत प्रवचन किया। अतिथि विशेष के रूप में गांधी नगर से पधारे शिक्षाविद् **भ्राता टी.डी. पटेल** ने अपने अनुभवों से शिक्षकों के उत्तरदायित्व और कार्यों की सराहना की। शिक्षा प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका **ब्र.कु. शीलू बहन** ने कहा कि समाज में मूल्यों की कमी आध्यात्मिकता के न होने से है। आध्यात्मिकता के समन्वय से संसार स्वर्ग बन जाएगा। जीवन का अर्थ केवल श्वांस लेना नहीं है अपितु मूल्यों से सम्पन्न होना भी है। **डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि** ने विश्वविद्यालयों में हो रही 'मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा' के कोर्स के सम्बन्ध में सभी को जानकारी दी। **ब्र.कु. करूणा** ने कहा कि यहाँ जो पढ़ाई होती है, वह सभी सेवाकेन्द्रों में पढ़ाई जाती है। 'एक परमात्मा, विश्व एक परिवार' इस पढ़ाई को मूल्य कहा जाता है और यह परमात्मा का ज्ञान है। मंच संचालन **ब्र.कु. सुमन बहन** ने किया।

20 मई, 2015 के दिन प्रात: 10 बजे सम्मेलन का उद्घाटन गुजरात के महामहिम राज्यपाल **ओ.पी. कोहली** एवं संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका **दादी रतनमोहिनी** के द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर हुआ। सभी शिक्षकों का स्वागत करते हुए **डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल** ने कहा कि शिक्षक वह है जो खुद और खुदा की पहचान कराता है। **ब्र.कु. मृत्युंजय** ने कहा कि यह संस्था चरित्र निर्माण का कार्य कर रही है, जो वास्तव में शिक्षकों का कार्य है। राज्यपाल **ओ.पी. कोहली** ने कहा कि देश की परिस्थिति दो राह पर चल रही है। एक है- आर्थिक विकास और दूसरा है- आध्यात्मिक, सांस्कृतिक ज्ञान। पहली शिक्षा रोजगार दिलाता है, दूसरी सामाजिक मूल्य बोध। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में तीन बातें हैं- आध्यात्मिकता, धार्मिकता और नीति। वर्तमान शिक्षा में आध्यात्मिक, सांस्कृतिक पुनर्जागरण की शिक्षा देनी चाहिए जो इस विश्वविद्यालय में दी जाती है।

दादी रतनमोहिनी ने आशिर्वचन देते हुए कहा कि भारत को पवित्र स्थान माना जाता है जहाँ देवी-देवता निवास करते हैं। इसको स्वच्छ और पवित्र बनाना हमारा कार्य है। यह सभी शिक्षक समझें, यह तब होगा जब हमारे अंदर स्नेह, प्रेम, दया इत्यादि भाव निहित होंगे। **ब्र.कु. कैलाश बहन** ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। गुजरात ज़ोन की मुख्य संचालिका **ब्र.कु. सरला दीदी** भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थीं। **ब्र.कु. मंजू बहन** ने मंच संचालन किया।

सम्मेलन में भारत की एकता और अखण्डता के लिए जीवन-मूल्य; मानसिक एवं पर्यावरण प्रदूषण मुक्त भारत; विज्ञान, अध्यात्म और मूल्य शिक्षा द्वारा उज्जवल भविष्य; सकारात्मक चिंतन - खुशी की कुंजी इत्यादि विषयों पर खुले सत्रों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर **पद्मश्री डॉ. भक्तवत्सलम्** (चेयरमेन, के.जी. ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स और के.जी. हॉस्पिटल, कोयम्बटूर) को ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से 'शिक्षा विभूषण अवार्ड' देकर सम्मानित किया गया।

22 मई, 2015 को प्रात: 9 बजे सम्मेलन का समापन सत्र हुआ जिसमें 'वर्तमान पाठ्यक्रम में मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकता' पर विचार-विमर्श किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता **डॉ. श्रीमंत साहू** ने शिक्षक को भगवान का दूसरा रूप मानते हुए कहा कि यह बच्चों को ज्ञान देते हैं, राह दिखाते हैं। स्वस्थ वह है जो मन से शक्तिशाली है, सकारात्मक है। **डॉ. आर.पी. गुप्ता** ने कहा कि विद्यार्थियों में परिवर्तन के लिए शिक्षा को प्रतिबद्ध होना चाहिए। **डॉ. ब्र.कु. ममता बहन** ने प्रस्तुति प्रस्ताव करते हुए कहा कि मूल्य बोध और आध्यात्मिकता आज के समय की मांग है। उन्होंने सभी शिक्षकों को इसके लिए कटिबद्ध होकर मूल्य शिक्षा की प्रस्थापना के लिए आह्वान किया। **डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल** ने अपने कर्तव्यों के प्रति सजाग किया। **ब्र.कु. मृत्युंजय** ने कहा कि दुनिया यदि अंधकार में है तो लाइट लगाने का कार्य हमें करना है। शिक्षकों को आध्यात्मिकता को जीवन में अपनाने का लक्ष्य बनाना चाहिए। मंच संचालन **ब्र.कु. नन्दिनी बहन** ने किया।

ब्र.कु. जयश्री
अहमदाबाद

अन्नामलाई विश्वविद्यालय

के तकनीकी सहयोग से संचालित पाठ्यक्रम

ब्रह्माकुमारीज़, शिक्षा प्रभाग (R.E.R.F.)

मूल्य शिक्षा एवं अध्यात्म

Self Management & Crisis Management

डिप्लोमा	स्नातकोत्तर डिप्लोमा	एम.एससी.	एम.बी.ए.
हिन्दी / अंग्रेजी / तमिल / कन्ड़ / उड़िया / मलयालम / तेलगू / गुजराती	हिन्दी / अंग्रेजी / तमिल / कन्ड़ / उड़िया / मलयालम / तेलगू / मराठी / गुजराती / नेपाली	हिन्दी / अंग्रेजी / तमिल / कन्ड़ / उड़िया / गुजराती	अंग्रेजी
+ 2 अथवा समकक्ष	डिग्री या समकक्ष	डिग्री या समकक्ष	डिग्री या समकक्ष
एक वर्ष	एक वर्ष	दो वर्ष	दो वर्ष
2500 /- रू.	4500 /- रू.	प्रथम वर्ष - 4500 /- रू. द्वितीय वर्ष - 7000 /- रू.	प्रथम वर्ष - 14500 /- रू. द्वितीय वर्ष - 14000 /- रू.

बी.एससी.	पी.जी. डिप्लोमा इन काउण्सिलिंग
हिन्दी / अंग्रेजी / तमिल	अंग्रेजी
+ 2 अथवा समकक्ष	डिग्री या समकक्ष
तीन वर्ष	एक वर्ष
3000 /- रू. प्रतिवर्ष	4500 /- रू.

एम.एससी (Lateral entry-one year)
पी.जी. डिप्लोमा (VE & S) प्राप्त कर चुके विद्यार्थियों के लिए

पाठ्यक्रम **नियमावली और आवेदन फार्म** ब्रह्माकुमारीज़ के किसी भी पी.सी.पी. केन्द्र अथवा शान्तिवन स्थित निदेशक कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है। (1) फार्म शुल्क - 100 रू. (एम.बी.ए. के लिए 250 रू.) (2) पोस्ट के द्वारा फार्म प्राप्त करने के लिए 094422-68660 पर सम्पर्क कर सकते हैं। **वार्षिक परीक्षा प्रत्येक वर्ष 19 मई से प्रारम्भ होगी।**

प्रवेश प्रारम्भ

1. यशवंत राव चव्हाण महाराष्ट्र खुला विश्वविद्यालय, नासिक 2. वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा
3. कर्नाटक राज्य खुला विश्वविद्यालय, मैसूर 4. गणपत विश्वविद्यालय, मेहसाना 5. डाउन टाउन विश्वविद्यालय, आसाम।

राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय
उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग, आबू पर्वत

डॉ. ब्र.कु. पांडियमणि
निर्देशक, मूल्य शिक्षा कार्यक्रम, आबू पर्वत

AU Nodal Office

ब्रह्माकुमारीज़, विश्व शान्ति भवन
36, मिनाक्षी नगर, पी. एण्ड टी. नगर के पीछे
मदुराई - 625 017 (तमिलनाडु), फैक्स: 04522-640666
मो.नं.: 094422-68660 / 094141-52522
E-mail: valueeducationmadurai@gmail.com
Website: www.bkvalueeducation.in

Directorate Office

ब्रह्माकुमारीज़, वैल्यू एज्युकेशन
प्रभु पसंद बिल्डिंग, **शान्तिवन, आबू रोड (राज.)**
पिन कोड-307 510, फैक्स: 02974-228100
मो.नं.: 094141-53090 / 094422-22157
E-mail: bkpandiamani@gmail.com
Website: www.bkvalueeducation.in

प्रवेश प्रारम्भ : प्रवेश की अंतिम तिथि 30 नवम्बर, 2015

1. गुवाहाटी (आसाम)। आसाम डाउन टाउन वि.वि. और ब्रह्माकुमारीज़ शिक्षा प्रभाग के बीच एम.ओ.यू होने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं (बायें से दायें): एडीटीयू के उप निदेशक संगीता काकोटी, कुलाधिपति डॉ. एन.एन. दत्ता, ब्र.कु. मृत्युंजय, एडीटीयू के कुलपति और अध्यक्ष, ब्र.कु. शीला तथा डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि। **2. भुवनेश्वर (उड़ीसा)।** उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम डॉ. एस.सी. जमीर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय तथा ब्र.कु. लीना बहन। **3. रांची (झारखंड)।** झारखंड के मुख्यमंत्री रघुवर दास जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय तथा अन्य। **4. शान्तिवन (राजस्थान)।** कुरुक्षेत्र वि.वि. के कुलपति लेफ्टिनेंट डॉ. डी.डी.एस. सन्धु को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय तथा डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि। **5. भुवनेश्वर (उड़ीसा)।** भुवनेश्वर में आयोजित शिक्षा प्रभाग के कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के डायरेक्टर डॉ. अशोक कुमार मोहापत्र। साथ हैं ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. लीना तथा अन्य। **6. शान्तिवन (राजस्थान)।** गुजरात वि.वि. के कुलपति डॉ. एम.एन. पटेल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय तथा डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि।

Education Wing HQs. Office
B.K. Mruthyunjaya, Vice-Chairperson, Education Wing
Brahma kumaris, Value Education Centre
Anand Bhawan, 3rd Floor, Shantivan, **Abu Road-307510 (Raj.)**
E-mail: educationwing@bkivv.org
Education Wing, National Co-ordinators Office
B.K. Dr. Harish Shukla, National Coordinator, Education Wing
Sukh Shanti Bhawan, Kankaria, **Ahmedabad-380022 (Guj.)**
Mob. No. : +91 9427638887 **Fax :** 079-25325150
E-mail: harishshukla31@gmail.com

To,